Date
Page

1 क) कवि को राम - नाम की रट क्यों नहीं भूलती?
उ कवि अपने आप को प्रभु का परम भक्त मानते है उन्हे राम नाम की रट लग गई है। प्रभु से एकाकार होने के कारण उनके अंग - अंग में प्रभु - भक्ति समा है। इसलिए की नहीं भूलती।

ख रैदास ने स्वयं को धागा और प्रभु को मोती क्यों माना है।
उ ईश्वर का स्वरूप तो अमूल्य है। मन में छिपे भक्ति के उस स्वरूप किया जा सकता है। भक्त तो उस धागे के समान है जो भक्ति के अमूल्य मोतियों को सगुण ही मोतियों के ~~समान~~ है ईश्वर नाम के रूप में पिरोता है। ईश्वर अपने गुणों से अपने भक्त को तरह - तरह से प्रभावित करता है। वे सारे गुण ही मोतियों के समान है जिन्हें भक्ति व भावना रूपी धागे से भक्त पिरोता है इसलिए न स्वयं को धागा माना है।

Date ______
Page ______

ग) रैदास जी अपने ईश्वर के साथ किन-किन रूपों ~~खब~~ एकाकार हो गए है?

उ) परमात्मा की एकनिष्ठ भक्ति करके कवि और ईश्वर एक होकर अभिन्न हो गए है। प्रभु चंदन है तो कवि पानी, प्रभु है तो कवि मोर, वह चाँद तो कवि चकोर पक्षी, वह दीपक है तो कवि स्वयं बाती, वह शुद्ध मोती है तो कवि धागा, वह सोना है तो कवि सुहागा। इस प्रकार ईश्वर की एकनिष्ठ भक्ति से ~~उ~~ उसका महत्व और भी बढ ~~गय~~ गया है?

घ) अछूतों पर कौन द्रवित होता है और क्यों?

उ) दूसरे पद मे गरीब निवाजु को कहा गया है। जिस व्यक्ति पर ईश्वर की कृपा होती है वह मोक्ष प्राप्त कर लेता है। नीच व्यक्ति का भी उद्धार हो जाता है। ऐसे लोग जो स्पर्श दोष के कारण हाथ लगने पर अपने-आपको अपवित्र मानते है ऐसे जीवो पर करुणा ~~वाले~~ प्रभु ही है जो दुखियो के दर्द से आते है।

Date
Page

(ग) दूसरे पद का भाव क्या है और क्यों?

उ इस पंक्ति का आशय है कि सांसारिक नीच जाति में उत्पन्न होनेवालों के प्रति दोष मानते हुए उन्हें अछूत मानते हैं पर ईश्वर उन लोगों पर भी कृपा करते हैं। उनका उद्धार कर देते हैं क्योंकि उनकी दृष्टि में भक्त की भक्ति ही श्रेष्ठ है। उसका प्रेम ही सर्वोपरि। इसीलिए प्रभु को पतित पावन, भक्त-वत्सल, दीनानाथ कहा जाता है।

2 निबंधात्मक प्रश्न -

(क) रैदास की भक्ति भक्त के आकुल मन की पुकार है जो परमात्मा को रिझाने और पाने के लिए है। अन्य संतों की भाँति दार्शनिक सिद्धांतों के चक्कर में नहीं पड़े। उन्होंने प्रभु की कृपालुता और भक्त वत्सलता को वाणी प्रदान की है। उनकी भक्ति सच्चे हृदय की आवाज को व्यक्त करती है मानो। उनका मानना था कि राम का परिचय पाने के बाद ही हम अपने मन की दुविधा दूर कर सकते हैं। भक्ति दरवाजे का नाम नहीं जब तक

Date
Page

मनुष्य पूर्ण वैराग्य की स्थिति को प्राप्त नहीं करता तब तक भक्ति के नाम पर की जाने वाली सभी साधनाएं केवल भ्रम और आडंबर हैं। जिनसे कोई लाभ नहीं हो सकता सोने की शुद्धि का परिचय उसे पीटने काटने, तपाने या सुरक्षित रखने से नहीं होती बल्कि सुहागे के साथ संयोग से होती हमारे हृदय निर्मलता तभी उत्पन्न होती है जब परमात्मा से हमारी पहचान हो जाती है।

ख " रैदास भक्त कवि के साथ-साथ एक समाज सुधारक संत भी थे। तर्क सम्मत उत्तर दीजिए।

3/3 कवि ने ईश्वर को पतित पावन, भक्त, दीननाथ व उद्धारक कहा है। निम्न श्रेणी के लोगों को भी प्रभु ऊँचा कर देता है। वह अपने भक्तों पर दया करता है तथा उनका उद्धार करता है। उनका गोविंद किसी से नहीं डरता। कवि ने प्रभु को नाम देकर भी उसके निराकार रूप की चर्चा की है। गरीबों के दुःख दर्द को समझने वाला वही उन्हें पीड़ाओं से मुक्ति दिलाने वाला भी है

Date______
Page______

क शब्द पद बन जाते है ?

उ शब्द जब तक मे प्रयुक्त नहीं किया तब तक स्वतंत्र होते है लेकिन वाक्य इन शब्दो का अस्तित्व स्वतंत्र न रहकर वाक्य के लिंग बचन कारक और क्रिया के नियमो से अनुशासित हो जाता है। व्याकरण के नियमों मे बधने मचे शब्द न रहकर पद जाते है।

ख शब्द व पद की परिभाषा सोदाहरण समझाकर लिखिए।

उ जैसे- मोहन गया। सोहन ने रोहन को पढाया।
यहां मोहन शब्द होते हुए भी वाक्य प्रयुक्त होने के कारण पद है लिंग लिंग, वचन, कारक से पद बंध्या तथ इनके व्याकरणिक नियम इस पर लागू हो रहे है।

ग	शब्द	पद
1	वर्णों के योग शब्द बनते है	वाक्य मे प्रयुक्त कहलाते है।
2	शब्दो का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है।	सार्थक शब्द समूह से जुड़कर शब्द पद बन जाते है।